भूखी चिड़िया की कविता

एक थी चिड़िया
चिड़िया भूखी थी
उड़ी दाने की खोज में
दाना था खूंटे के भीतर बंद
चिड़िया बढ़ई से बोली-
बढ़ई भाई, बढ़ई भाई
दाना खूंटे में बंद है
क्या खाऊं! क्या पिऊं?
क्या लेके जाऊं परदेस?

बढ़ई ने खूंटा चीरा
खूंटे से दाना निकला
दाना उड़ा फुर्र
चिड़िया दाने के पीछे उड़ी
दाना उड़कर जा गिरा
राजा के गोदाम में
गोदाम पर संतरी था
चिड़िया संतरी से बोली-
संतरी भाई, संतरी भाई
दाना गोदाम में बंद है
क्या खाऊं? क्या पिऊं?
क्या लेके जाऊं परदेस?

संतरी ने मंत्री को ख़बर दी
मंत्री ने राजा को ख़बर दी
राजा ने सिपहसालार को बुलाया
सिपहसलार ने फ़ैसला करने को
मुंसिफ़ बैठाया
मुंसिफ़ ने पोथे उलटे
मुंसिफ़ ने की जिरह-
भूखी क्यों थी चिड़िया?
ख़ामख़ाहभूखी थी ही अगर
तो दाने का पीछा क्यों किया
दाना जो अपनी मरज़ी से
आ गिरा राजा के गोदाम में?
ख़बर फैली कानोकान
अख़बारों में छपी
चिड़िया बनाम दाने के मुक़दमे की
भूखी थी चिड़िया
इसलिए गुनहगार थी
मारी गई चिड़िया
भूखी जो थी.

-गोरख पांडेय

पीपी : यानी पाखंडी प्रधानमंत्री

पाठक हमें माफ़ करेंगे क्योंकि भारत के प्रधानमंत्री को हर चीज़ का संक्षिप्त नाम रखने की आदत है। सो हमने भी भारत के प्रधानमंत्री के असली चरित्र का संक्षिप्तीकरण किया है। पीपी का मतलब है पाखंडी प्रधानमंत्री।

'स्वच्छ भारत अभियान' इस देश के 'पूंजीपतियों के नये' सेवक का नया पाखण्ड है। अब लोगो को समझ में आने लगा है कि यह जनता का सेवक नहीं वरन् पूंजीपतियों का सेवक है। वह अपने मदारी के लिए, मदारी के इशारों पर नाच रहा है और जनता का मनोरंजन कर रहा है। जनता भाजपा सरकार के इस प्रहसन को देख रही है कि कैसे मंत्री कूड़ा बिखरवाते हैं और फिर कैमरों के सामने झाड़ू लगाते हैं। हद तो तब हो गयी जब इस देश के मुखिया ने 2 अक्टूबर को कैमरों की फ्लैश लाइटों के बीच वाल्मीकि बस्ती में झाड़ू पकड़ ली। वाह! क्या अद्भुत नजारा था। ब्लैक कमांडो के सुरक्षा घेरे में, महंगी ड्रेस में सुसज्जित अपने अरबपति सहोदरों के साथ एक 'मेहतर'। यह लोगों के साथ भद्दा मजाक नहीं तो और क्या है? सफाईकर्मियों की समस्या को, मैला ढोने की कुप्रथा को इस मुल्क का प्रधानमंत्री कैसे देखता है, यह इसका उदाहरण है। पाखंडी प्रधानमंत्री की परवरिश ही ऐसी संस्था में हुई है जो उनसे सिर्फ पाखण्ड ही करवा सकती है। बेशक हर कोई चाहता है कि उसका परिवेश साफ़ सुथरा हो किन्तु फ़िर भी हमारा परिवेश अन्यान्य तरीके से गंदा है। सड़कें, नालियां, कार्यलय, प्लेटफार्म आदि गंदगी से पटे हुए मिल जायेंगे। हर शहर के ढलावों से भयंकर बदवू आती महसूस होती है। गरीब व घनी बस्तियों में तो गंदगी के पहाड़ मिल जायेंगे। औद्योगिक बस्तियां तो नरक से भी बदतर हैं। निश्चय ही 'स्वच्छ भारत अभियान' जैसे पाखंडों से यह समस्या खत्म होने वाली नहीं है वरन् समस्या कहीं ज्यादा गंभीर है। 'स्वच्छ भारत अभियान' तो स्वयं लोगों को उनकी नजरों में गिराने भर का अभियान है जो यह जताने के लिए है कि 'देश की गंदगी के लिए इस देश के लोग ही जिम्मेदार है' जबकि समस्या का सार स्वयं इस पूंजीवादी व्यवस्था में है। इसलिए हमने इस कार्यक्रम के संचालक को पीपी कहा। हमारे देश में गंदगी एक नगर, शहर व महानगर के बेतरतीब व गैर-योजनाबद्ध विकास का परिणाम है। दूसरा, आमतौर पर सभी औद्योगिक मज़दूर बस्तियों में नागरिक सुविधाओं के अभाव के लिए पूंजीपति वर्ग जिम्मेदार है। स्वयं उद्योग-धंधों की स्थापना भी काफ़ी हद तक गैरयोजनाबद्ध तरीकों से होती है। इन औद्योगिक धंधों से निकलने वाले अपशिष्ट इन इलाकों में गंदगी फैलाने का प्रमुख कारण है। तीसरा साफ-सफाई में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल न के बराबर है। इस कारण ही मैला ढोने व सीवर साफ करने के लिए अभी भी सफ़ाई कर्मचारी ही लगाने पड़ते हैं। चौथा, गरीबी और अशिक्षा। उपरोक्त को दूर किये बिना जब इस देश का प्रधानमंत्री 'स्वच्छ भारत अभियान' चलाता है तो वह पाखण्ड नहीं तो और क्या है? यहां पर यह भी महत्त्वपूर्ण है कि 'सफाई के काम' को जातिगत ढांचे को तोड़े बिना नहीं किया जा सकता है। कैमरों के सामने झाड़ू उठाना एक बात है और झाड़ू को आजीविका का स्रोत बनाना बिल्कुल दूसरी बात है। सफाई कर्मियों को सम्मानजनक रोजगार की गारण्टी पहले प्रदान कर दी जाये, सफाई की नौकरी जैसे अपमानजनक कार्य के जातिगत आधार को खत्म करके फिर 'स्वच्छ भारत अभियान' जरूर चलाया जाना चाहिए। तब कैमरों की चकाचौंध में झाड़ू लगाने वालों की हकीकत पता चल जायेगी। जो लोग घरों में झाड़ू नहीं लगा पाते, जो अपने घर के टायलेट साफ नहीं कर पाते, वे चश्मा लगाये सूट-बूट पहनकर सफाईकर्मी का स्वांग भर रहे हैं। हमारे देश की सबसे बड़ी गंदगी तो इस देश के पूंजीपति, नौकरशाह, अफसर व राजनेता हैं। वे इस गंदगी के मुख्य स्रोत हैं। 'स्वच्छ भारत' के लिए इस गंदगी को हटाना पड़ेगा। इस 'गंदगी' ने विभिन्न समस्याओं मसलन् गरीबी, असमानता, भुखमरी, बेरोजगारी, पर्यावरण व आवास समस्या जैसी समस्याओं को जन्म दे रहा है। इसका विकल्प है समाजवाद। जो नगरों, शहरों व महानगरों का योजनाबद्ध तरीके से विकास करेगा, जो उद्योग-धंधों व उनसे सटे मेहनतकशों के रहनेवाली जगहों का भी योजनाबद्ध विकास करेगा। जो सबसे विकसित तकनीक अपनाकर सफाई के अमानवीय चरित्र को खत्म करेगा जो वाल्मीकि समाज के लोगों को सम्मानजनक रोजगार प्रदान करके सफाई के जातिगत स्वरूप को खत्म कर देगा। और इस समस्या का मुकम्मिल समाधान कर देगा।

- नागरिक

ये मंजर पहले भी देखे हैं।

पाकिस्तान भारत का 'छोटा भाई' है। वैसे चूंकि पाकिस्तान भारत के विभाजन से बना है इसलिए इसे पौराणिक कथाओं के अनुसार भारत का पुत्र भी कहा जा सकता है। जो भी हो, दोनों मामले में यह कहा जा सकता है कि उसमें भारत के कुछ गुण तो होंगे ही। अगस्त के अंत और सितम्बर के उत्तरार्ध ने इसे प्रदर्शित भी किया। आज से दो-तीन साल पहले अपने प्यारे हिन्दुस्तान में अन्ना हजारे एवं केजरीवाल एण्ड कम्पनी की बड़ी धूम थी। वे भारत को बदल देने के लिए मैदान में उतरे थे। कम से कम वे भ्रष्टाचार को तो पूरी तरह खत्म ही करने वाले थे। यह उस जमाने की बात है जब नरेन्द्र मोदी ने पूरी तरह टी.वी. चैनलों पर कब्ज़ा नहीं किया था। तब वे ही भारत के उद्धारक घोषित किये जा रहे थे। भारत का कायांतरण तब केवल वक्त की बात थी।

अब उस जमाने की भूली-बिसरी यादें ही रह गयी हैं। अपराध के ख़िलाफ़ जेहाद छेड़ने वाले मध्यम वर्ग ने देश के शीर्ष पर सबसे बड़े अपराधियों को स्वीकार कर लिया है। उसने चुपके से भ्रष्टाचार को भी अपने दिमाग से निकाल दिया है। उसे शायद अब खुद ही पता नहीं कि इस मोदीमय वातावरण में वह क्या चाहता है। वह मदहोशी में या कहें तो 'डिलीरियम' में जी रहा है। इस बीच अन्ना हज़ारे एवं केजरीवाल एण्ड कम्पनी अपनी मांदों में दुबके पड़े हैं। उन्हें विश्वास है कि यह कहावत हमेशा सच होती है-हर कुत्ते के दिन फिरते हैं।

पाकिस्तान में इस समय दो शख़्स राजधानी इस्लामाबाद में डेरा डाले-बैठे हैं। ये पाकिस्तान की वर्तमान नवाज शरीफ सरकार के इस्तीफ़े से कम कुछ भी नहीं चाहते। इनका आरोप है कि पिछले संसदीय चुनावों में धांधली हुई थी और इसलिए धांधली से चुने गये प्रधानमंत्री को इस्तीफ़ा देना चाहिए। ये दोनों शख़्स हैं-इमरान खान एवं ताहिर कादरी।

इमरान खान से हर भारतीय परिचित है क्योंकि पाकिस्तान क्रिकेट टीम का कप्तान होने के चलते वे देशभक्त भारतीयों के दुश्मन नंबर वन थे। संघी 'देशभक्ति' की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है पाकिस्तान विरोध और क्रिकेट संघी देशभक्तों का भी सबसे प्रिय खेल है, भले ही ब्रिटिश उपनिवेशवादियों की देन ही क्यों न हो। क्रिकेट में अपनी उपलब्धियों के चलते वे पाकिस्तान में काफ़ी लोकप्रिय रहे हैं और इसीलिए एक समय उन्हें ख्याल आया कि उन्हें पाकिस्तान का मसीहा बन जाना चाहिए और उन्होंने अपनी पार्टी बना डाली। सड़कों पर अपनी लोकप्रियता देख उन्हें उम्मीद थी कि पिछले चुनाव के बाद वे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बन जायेंगे पर उन्हें निराशा हाथ लगी। अब वे उम्मीद की एक नई किरण लेकर इस्लामाबाद में आ डटे हैं।

जनाब ताहिर कादरी अभी पिछले साल तक सारी दुनिया में तो क्या स्वयं पाकिस्तान में भी गुमनाम थे। लेकिन एक सुहानी सुबह पाकिस्तानियों की तरह सारी दुनियां ने देखा कि वे अन्ना हज़ारे की तर्ज पर इस्लामाबाद में डटे हैं। लोग़ों ने छानबीन की तो पाया कि कादरी साहब एक धार्मिक इंसान है और वर्षों से कनाडा में रह रहे थे। अब वे पाकिस्तान के बिगड़ते हालात से गमगीन होकर उससे पाकिस्तान को उबारने वहां आये हैं। जानकारों ने और खोजबीन की तो उनके पीछे के तार पाकिस्तानी सेना से जुड़े मिले।

इस्लामाबाद का वर्तमान जमावड़ा भी उधर की ओर ही संकेत करता है। इन दोनों जमावड़ों के तार सेना के मुख्यालय रावलपिंडी तक जाते दीखते हैं। पाकिस्तान की सेना पाकिस्तान में ज्यादातर समय शासन करती रही है। उसके बड़े अधिकारी खुद को पाकिस्तान का वास्तविक शासक समझते हैं। उन्हें इस समय यह बात अखर रही है कि जरदारी और नवाज शरीफ़ जैसे लोग पाकिस्तान पर शासन कर रहे हैं। मुशर्रफ़ के खिलाफ़ बड़े आंदोलन के बाद सेना पीछे हट तो गयी पर वह हर समय इस ताक में रहती है कि फिर से सत्ता अपने हाथों में ले ले। इसके लिए वह न केवल हर अस्थिरता का इस्तेमाल करती है बल्कि अस्थिरता को प्रायोजित भी करती है। इस समय भी यही हो रहा है। यदि इमरान खान और ताहिर कादरी जैसे फर्जी मसीहा अन्ना हज़ारे और केजरीवाल एण्ड कंपनी की तरह तत्कालिक तौर पर सफल हो रहे हैं तो इस कारण कि मेहनतकश जनता में बेहद गुस्सा है। यह गुस्सा पूंजीपति वर्ग व सेना के खिलाफ़ है तो भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के प्रति भी। यह जीवन की मुसीबतों से पैदा होता है। इमरान खान और ताहिर कादरी जैसे स्वघोषित मसीहा और उनके प्रायोजक इसी गुस्से का अपने हितों में इस्तेमाल कर रहे हैं। इस सबका अंतिम हश्र भारत की तरह ही बुरा होगा और पाकिस्तान की गर्दन पर कोई मोदी, कोई अमित शाह सवार होगा।

- नागरिक

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।

फरीदाबाद में अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीनल सैंटर केसी रोड, एनएच-5, 2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड, 3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन, 4. रैंक, 45 नीलम चौक, 5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे, 6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने, 7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।